

2021

HINDI — GENERAL

First Paper

Full Marks : 100

*The figures in the margin indicate full marks.**Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.*

खण्ड - क

(मध्यकालीन हिन्दी काव्य)

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

8×3

(क) प्रेम न बारी ऊपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।

राजा परजा जिहिं रुचै, सीस देइ लै जाइ॥

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।

सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या मांहि॥

(ख) किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत।

मनिमय कनक नंद कै आँगन बिंब पकरिबै धावत।

कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं कर सौं पकरन चाहत।

किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ पुनि पुनि तिहि अवगाहत।

कनक भूमि पर कर-पग-छाया यह उपमा इक राजति।

करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।

बाल-दसा सुख निरखि जसोदा, पुनि पुनि नंद बुलावति।

अँचरा तर लै ढाँकि सूर के प्रभु कौं दूध पियावति॥

(ग) जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।

काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे॥

कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे।

खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे॥

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।

तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

(घ) या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।

ज्यों ज्यों बूड़े स्याम रंग त्यों त्यों उज्जल होय॥

जपमाला छापा तिलक सरै न एकौ काम।

मन काँचे नाँचे वृथा साँचे राँचे राम॥

Please Turn Over

2. किसी एक आलोचनात्मक प्रश्न का उत्तर लिखिए : 14×1
- (क) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
- (ख) “सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य में अद्वितीय है।”— कथन तर्कपूर्ण ढँग से स्पष्ट कीजिए।
- (ग) मीराबाई की भक्ति-भावना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए : 6×2
- (क) कबीर के काव्य में ‘गुरु की महिमा’ पर टिप्पणी लिखिए।
- (ख) तुलसीदास के काव्य में ‘नामस्मरण’ पर प्रकाश डालिए।
- (ग) मीरा की विरह-भावना पर प्रकाश डालिए।
- (घ) ‘बिहारी के दोहे गागर में सागर का अनुपम उदाहरण हैं।’— स्पष्ट कीजिए।

खण्ड - ख

(आधुनिक हिंदी काव्य)

4. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन काव्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 8×3
- (क) असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृभूमि के—
रूको न शूर साहसी!
- अराति सैन्य सिन्धु में सुवाड़वाग्नि-से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो-बढ़े चलो, बढ़े चलो!
- (ख) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
- (ग) नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही :
ये उपमान मैले हो गए हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूचा।
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

(घ) आबद्ध हूँ, जी हाँ, आबद्ध हूँ—
 स्वजन-परिजन के प्यार की डोर में...
 प्रियजन के पलकों की कोर में...
 सपनीली रातों के भोर में...
 बहुरूपा कल्पना रानी के आलिंगन-पाश में...
 तीसरी-चौथी पीढ़ियों के दंतुरित शिशु-सुलभ हास में...
 लाख-लाख मुखड़ों के तरुण हुलास में...
 आबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा आबद्ध हूँ!

5. किसी एक आलोचनात्मक प्रश्न का उत्तर दीजिए : 14×1
- (क) जयशंकर प्रसाद के काव्य में निहित प्रेम-तत्त्व का निरूपण कीजिए।
 (ख) पठित कविताओं के आधार पर महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
 (ग) 'नागार्जुन का काव्य सामाजिक पक्षधरता का काव्य है।'— स्पष्ट कीजिए।
6. किन्हीं दो लघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 6×2
- (क) निराला की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।
 (ख) 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
 (ग) 'साँप' कविता की मूल-संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
 (घ) 'बहुत दिनों के बाद' कविता के भाव-सौन्दर्य पर विचार कीजिए।
-